③

ONE DAY MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL SEMINAR ON

PLIGHT OF INDIAN FARMERS : ISSUES AND CHALLENGES

भारतीय शेतकऱ्यांच्या व्यथा वेदना, दशा : समस्या व आव्हाने

Saturday, 16th February, 2019

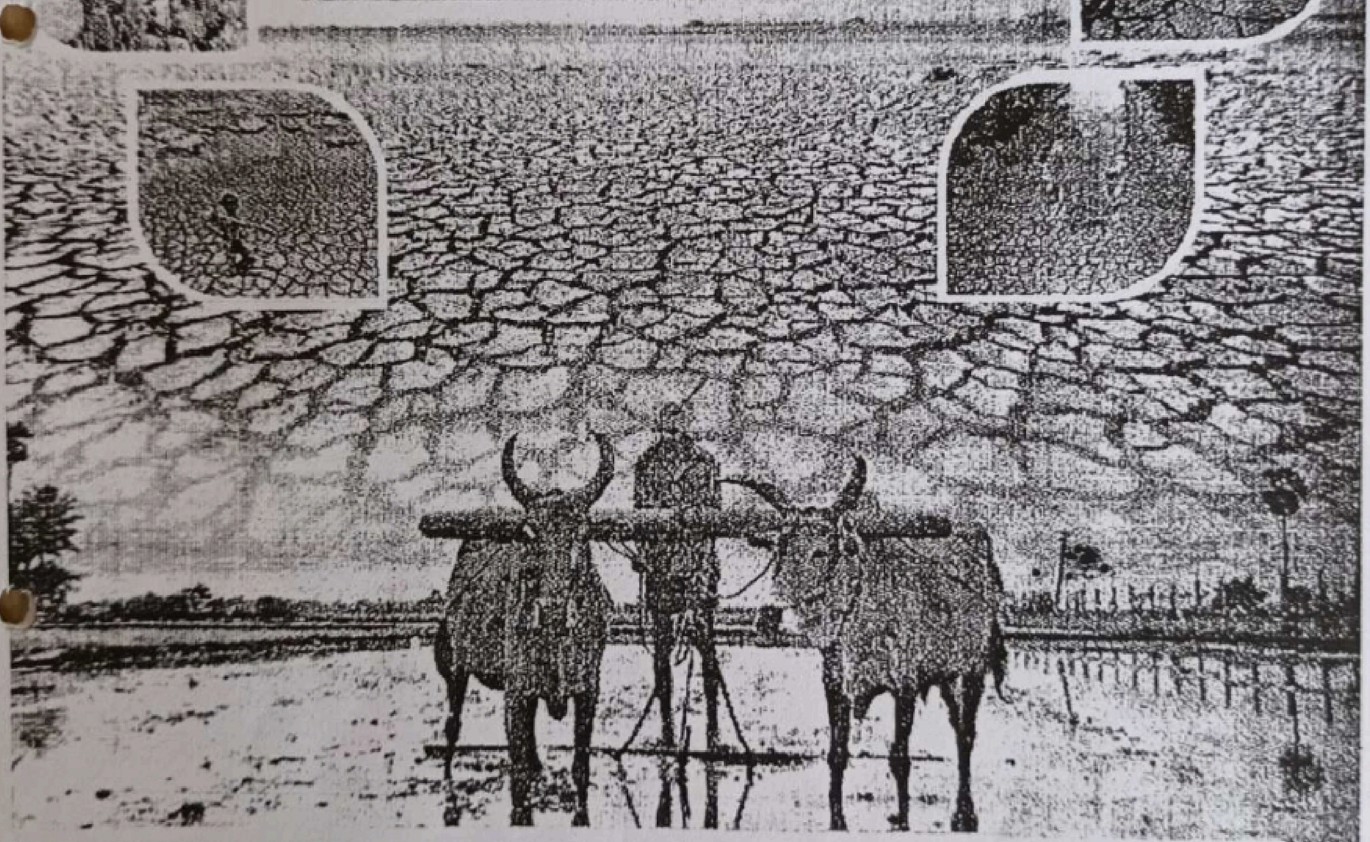

Organized by

Tararani Vidyapeeth's

KAMALA COLLEGE, KOLHAPUR

NAAC Reaccredited 'A' grade (3.12 CGPA)

College with Potential for Excellence

www.kamalacollegekop.edu.in

I/C Principal

Shri Sampatrao Mane Mahavidyalaya,

Khanapur, Dist-Sangli

Sr. No.	Title	Author	Page No.
276	रामदरश मिश्र जी की कहानियों में किसान का चित्रण	प्रा. डॉ. रशीद तहसिलदार	1151-1152
277	हिंदी कविताओं में किसान जीवन का चित्रण	प्रा. महादेव बेनके	1153-1155
278	'तितली' उपन्यास में किसानों का जीवन वर्णन	वर्षा लिंबराज कांबळे	1156-1159
279	लोकनायक मटरू के संदर्भ में 'गंगामैया'	प्रा.डॉ. अजयकुमार कृष्णा कांबळे	1160-1163
280	भारतीय किसानों की व्यथा व स्थिती का चित्रण	प्रा. संपतराव सदाशिव जाधव	1164-1167
281	भारतीय किसान का जीवंत दस्तावेज 'अकाल में उत्सव'	प्रा.डॉ.छाया शंकर माळी	1168-1169
282	भारतीय गांव : किसान के परिप्रेक्ष्य में	प्रा.डॉ.सुगंधा हिंदुराव घरपणकर	1170-1173
283	भारतीय किसान समस्या और प्रेमचंद हिंदी साहित्य	प्रा. अपर्णा संभाजी कांबळे	1174-1176
284	लोकनायक मटरू के संदर्भ में 'गंगामैया'	प्रा. सचिन मधुकर कांबळे, प्रा.डॉ. अजयकुमार कृष्णा कांबळे,	1177-1180
285	प्रेमचंद के साहित्य में किसान जीवन	डॉ.रंजना आप्पासाहेब कमलाकर	1181-1182
286	श्रीलाल शुक्ल के 'सूनी घाटी का सूरज' में किसान जीवन चित्रण	श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे प्रा. डी. एस. घुटुकडे	1183-1185
287	हिंदी उपन्यासों में चित्रित किसान आत्महत्या : कारण और उपाय	प्रा. प्रविण विलास चौगले	1186-1188
288	संजीव के 'फाँस' उपन्यास में भारतीय किसानों की दशा:	छाया पंढारकर	1189-1192
289	21 वीं सदी के हिंदी काव्य में किसान विमर्श	डॉ.वैशाली सुनील शिंदे	1193-1195
290	'सोनामाटी'उपन्यास में चित्रित किसानों का शोषित जीवन	प्रा.डॉ.संदीप जोतीराम किर्दत	1196-1199
291	"किसानों की आत्महत्योंए - बढती आबादी वाले भारत के लिए एक चिंता का विषय"	सुश्री स्मिता अभिजित वणिरे	1200-1202
292	भारतीय किसान का जीवंत दस्तावेज 'अकाल में उत्सव'	प्रा.डॉ.छाया शंकर माळी	1203-1204
293	प्रेमचंद जी के साहित्य का किसान	सविता बळीराम राठोड	1205-1206

श्रीलाल शुक्ल के 'सूनी घाटी का सूरज' में किसान जीवन चित्रण

श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे
शोध छात्र, हिंदी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

प्रा. डी. एस. घट्टुकडे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
भा. वि. मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम
कन्या महाविद्यालय, कडेगांव–सांगली

भारत कृषिप्रधान देश है और इसमें ज्यादातर लोग देहातों में रहनेवाले है। 21 वीं शती में किसी न किसी कारणवश ग्रामीण भागों में से नवयुवक शहरों की ओर आ रहे है, वे उच्चशिक्षत होने के कारण अपने गाँव को भूल रहे हैं, अपने किसान माँ–बाप को अनपढ़ समझ रहे हैं। लेकिन बदलते समय के साथ कुछेक शहरी भाग–दौड़ से निजात पाने के लिए गाँव का शांत और सादगीपूर्ण जीवन पसंद कर रहे हैं। गाँव और किसान को भारतीय जीवन की आत्मा कहा जाता है। इसीकारण महात्मा गांधीजी ने स्वाधीनता आंदोलन के दौरान 'देहातों की ओर चलो' का नारा लगाया था। महात्मा गांधी ने पूरे भारत का दौरा करके यह बात समझ ली थी कि भारत की सामाजिक एवं आर्थिक धरोहर ग्रामीण व्यवस्था ही है। किसान ही पूरे भारत का अन्नदाता है और कृषि क्षेत्र से जुड़े व्यवसायों को प्रोत्साहन देने हेतु उन्होंने 'स्वदेशी' का भी आग्रह किया था। भारतीय किसान और उसका परिवेश हमेशा साहित्य को भी प्रभावित करता आया है। हिंदी के कथा साहित्य में श्रीलाल शुक्ल का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। 'राग दरगारी', 'सूनी घाटी का सूरज', 'बिस्रामपुर का संत' जैसे चर्चित उपन्यासों के कारण हिंदी में उनका नाम अमर हुआ है। श्रीलाल शुक्ल स्वयं एक किसान और गाँव से जुड़े लेखक होने के कारण उनकी अधिकांश रचनाओं ने देहात और किसानों का यथार्थ वर्णन आया है। भोगा हुआ यथार्थ उनकी रचनाओं में अंकित हुआ है। अतः हमने प्रस्तुत संगोष्ठी के लिए शोधालेख हेतु 'राग दरबारी' जैसी कालजयी उपन्यास के लेखक श्रीलाल शुक्ल के 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास का विवेचन किया है।

'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में अंकित किसान जीवन का चित्रण :–

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित 'सूनी घाटी का सूरज' का प्रथम संस्करण 1987 में हुआ है। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास का प्रकाशित सातवां संस्करण इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है। 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास किसानों के शोषित जीवन, उनके प्रतिभाशाली बच्चों की दुर्दशा का दस्तावेज है। देहातों में ठाकुरों की दमनकारी वृत्ति, उनके ऋण के तले दबा किसान, ऋण आदायगी के लिए किसानों के बच्चों का शोषण आदि बिंदुओं पर विवेच्य उपन्यास में विवेचन हुआ है। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने 'गोदान' जैसी कालजयी रचनाद्वारा 'होरी' जैसा भारतीय किसान का प्रतिनिधि पात्र दुनिया के सामने लाया। इस उपन्यास के द्वारा पहली बार भारतीय किसान की दुर्दशा और उसके जीवन की भयावहता का एहसास हुआ। इसके बाद निरंतर भारतीय साहित्य में किसान दुर्दशा का चित्रण होने लगा।

'गोदान' के होरी की दुर्दशा 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में नायक रामदास के पिता रामनाथ की होती है। आजीवन वे ठाकुरों के पास गिरवी खेतों को छुड़ाने के लिए हाड़तोड मेहनत करते हैं और इसी जददोजहद में जीवन का दांव भी हार जाते हैं। रामदास के पिताजी के पास केवल डेढ़ बीघे का खेत था है। उन्हें तीन लड़कियाँ थीं और एक लड़का। लड़का छोटा होने के कारण घर की और तीन लड़कियों की शादी की पूरी जिम्गेदारी उनपर थी। वे खुद ठाकुर बिरादरी से थे लेकिन अन्य ठाकुरों की तुलना में उनके खेत और जायदाद बहुत कम थी। इसलिए मेहनत करने और ऋण लेने के सिवाय उनके पास दूसरा विकल्प नहीं था। इसलिए बेटियों की शादी के लिए वे ठाकुर के पास अपने खेत गिरवी रखते हैं। बेटियों की शादी तो हो जाती है लेकिन ऋण आदा करने के लिए रामदास के पिता को ठाकुरों के पास बंधुवा मजदूर के रूप में रहना पड़ता है। जानवरों की देखभाल, पानी भरने से लेकर खेतों के काम में वे दिन–रात ढोरों की तरह मेहनत करते हैं। "चार बजे सवेरे से ही वे जानवरों के लिए चारा कांटते। जाड़े में अँधेरा होते हुए भी वे गँडासा लेकर 'खट–खट' की लय में कर देते, चार बजे से ही यह आवाज मेरे कानों में गूँजती रहती।"[1] स्पष्ट है कि रामदास के पिता से खेती से जुड़े बुआई, कटाई आदि के काम करवा लिये जाते हैं। इतने काम के बाद भी ठाकुर केवल ऋण का ब्याज आदा होने के बात कहता और उन्हें हमेशा फटकारता है। वह मजबूरी में उस शोषण को सहते रहते हैं।

आर्थिक खस्ता हालात के कारण उनके बेटे रामदास की पढ़ाई भी छूट जाती है। वह यहां–वहां घूमता रहता है। तब गांव का एक आदमी उन्हें नसीहत देता है–"काका, रमदस्सा को मंदराज भैंसों के पीछे भेज यिा करो। मदरसा टूट ही गया है। आगे पढ़ा–लिखाकर इसे जज–बॅरिस्टर तो बनाना नहीं है। यहीं घूमेगा। वैसे भैंसों के पीछे लगा रहेगा तो तुम्हें रूपिया धेला बरक्कत हो जाएगी।"[1] स्पष्ट है कि किसान एक बार ऋण के कुचक्र फँसने के बाद उसके परिवार के सदस्य भी मुसीबत में फँस जाते हैं। लेकिन जैसे–तैसे वे अपने बेटे को प्राइमरी स्कूल को भेजते हैं।

कर्जा वह मेहमान है जो एकबार आने के बाद जाने का नाम नहीं लेता। कर्ज का असर किसान के पूरे परिवार पर पड़ता है। सुनहरे भविष्य की कामना करते हुए किसान कर्जा तो लेता है लेकिन उसका यह सपना कर्ज के चक्र में टूटकर बिखर जाता है। भारत में यह विडंबना रही है कि जो किसान अपने खून का पसीना करके सबके लिए अनाज उगाता है उसके ही घर भूखमरी का डेरा रहता है। भूख से किसान और उसके परिवार का मरना भारत जैसे कृषिप्रधान देश के लिए लांछन है। आधे पेट सोना अधिकांश किसान परिवारों की नियति बन गई है। प्रायमरी स्कूल में रामदास पढ़ने जाता है लेकिन दोपहर के भोजन में उसे भुने हुए चने दिए जाते हैं। तो दूसरी ओर ठाकुर के बेटे नन्हूसिंह के डिब्बे में रोज तिल या बेसन के लड्डू, पूडियाँ और आलू, गुड़ की पूरी होते हैं। कर्जा लेने से किसान के घर में हमेशा अभाव और भूख का माहौल रहता है। दो वक्त की रोटी का जुगाड़ करना मुश्किल हो, वहाँ लड्डू–पुरी कहाँ से आए? नन्हूसिंह रामदास से कहता है, "दस्सू, करजे का लेना और जहर का खाना बराबर है। देखो, न काका ने मेरे बाप से करजा लिया होता और न तुम्हारे भाग में ये चने पड़ते।"[3] स्पष्ट है कि कर्ज के कारण किसान पूर्णरूप से कंगाल बन जाता है।

विवेच्य उपन्यास में नायक रामदास के पिता रामनाथ आजीवन ठाकुर के घर पर बंधुवा मजूदर की तरह हाड़तोड़ मेहनत करते रहते है। एक दिन ठाकुर के घरवाले शादी के लिए चले जाते हैं और घर–खेतों की जिम्मेदारी रामनाथ काका पर छोड़ी जाती है। खेतों में गन्नों के रस से गुढ़ बनने का काम शुरू था। वे ईख की कटाई करते वक्त उनके दोनों हाथ चक्की में पिसकर कट जाते हैं। बहुत खून बहता है और उन्हें अस्पताल में भरती किया जाता है। जब ठाकुर वापस आते हैं तब वे रामनाथ काका की पूछताछ करने के बजाए उन्हें डांटने लगते हैं। बड़े ठाकुर बिगड़ पड़े–"ये रामनाथ काका भी सिलबिल्ले हैं। जो काम एक बच्चा भी कर ले जाए, वह तक ये संभाल नहीं पाते। चारा काटने को कहो तो हाथ में गंडासा मार लें, पानी भरने जाएं तो घड़ा कुएं में गिरा दें। अब कोल्हू में ईख लगाने बैठे तो अपने हाथ पिच्ची कर डाले। मैं तो भैया, इसीलिए उन्हें कोई काम ही नहीं बताता।"[4] स्पष्ट है कि ठाकुर का यह बिगड़ना उल्टा चोर कोतवाल को डांटे की नीति को उजागर करता है। इस हादसे में खून ज्यादा बहने के कारण कुछ दिन बाद रामनाथ काका की अस्पताल में मौत हो जाती है। तो ठाकुर को उनके मौत से ज्यादा उन्होंने लिये कर्जे की फिक्र रहती है। उनकी शोषित गिद्ध नजर उनके बेटे रामदास पर जाती है और वे उसे बंधुवा मजदूर बना लेते है।

हमारे देश में ऐसे अधिकांश ऐसे किसान है कि उनके पास खेत जमीन के नाम पर कुछ छोटे–छोटे पट्टे है। दरअसल वे खेती मजदूर ही है। बंजर जमीन और अभाव के कारण वे इतनी छोटी खेती नहीं कर सकते। इसलिए जीवन निर्वाह करने के लिए उन्हें बड़े ठाकुरों और किसी ठेकेदारों के पास मजदूरी करने के सिवाय दूसरा विकल्प नहीं होता। विवेच्य उपन्यास में भी ऐसे खेतिहर मजदूरों के शोषण का जिक्र आया है। ठेकेदार दीनदयासिंह और सोबरनसिंह ऐसे खेतिहर मजदूरों से जबरन काम निकलवाना चाहते हैं। वे उनपर और उनके श्रम पर अपना अधिकार समझते हैं। खेत से काम करके वापस जा रहे मजदूरों को नैहर की खुदाई के काम के लिए सोबरनसिंह ठेकेदार जबरदस्ती करते हैं–"लगे हाथ यह काम भीकर डालो। नहर बन रही है। खुदाई का काम करना है। मर्दों के लिए बारह आना, औरतों के लिए आठ आना और अच्चों के लिए चार आना रोज का काम बताया।"[5] स्पष्ट है कि ठेकेदार ऐसे छोटे–छोटे खेतिहार मजदूरों से कम मेहनताने में काम करवा लेते हैं। मना करने के बाद उनकी मजदूरी नहीं जाती।

निष्कर्ष :–

स्पष्ट है कि 'सूनी घाटी का सूरज' देश के उन तमाम सूनसान देहातों में पनप रही किसान शोषणगाथा है। रामनाथ काका जैसे कई किसान मजबूरी में ऋण के कुचक्र में ऐसे पिस जाते हैं कि उससे वे आजीवन उबर नहीं पाते। इसका असर उनके परिवार पर होता है। रामदास एक मेधावी छात्र होने के बावजूद उसे इस ऋण को चुकाने हेतु अपना बचपन भूलाकार बंधुवा मजदूर बनना पड़ता है। रामनाथ की वित्तीय स्थिति अच्छी होती तो वे रामदास को अच्छी तरीके से पढ़ा–लिखा पाते। लेकिन इस सामंतवादी शोषण के कारण रामदास का बचपन मुरझा जाता है। इसके बावजूद वह कठोर मेहनत से पढाता है लेकिन शहर में भी उसकी प्रतिभा का न्याय नहीं मिलता और वह वापस गांव की ओर आकर मास्टर की नौकरी स्वीकारता है। रामदास जैसे कई किसानों के बेटे शोषण तंत्र के कारण

प्रतिभा होने के बावजूद अपना मुकाम हासिल नहीं कर पा रहे हैं। अतः उन्हें ही आगे बढ़कर किसानों का प्रबोधन करना है ताकि वे इस शोषण तंत्र का पर्दाफाश कर सके। वे ही अब इन 'सूनी घाटी के सूरज' बनेंगे।

संदर्भ सूची :–

1. श्रीलाल शुक्ल, 'सूनी घाटी का सूरज', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1987, पृ. 24
2. वही, पृ. 25
3. वही, पृ. 31
4. वही, पृ. 51
5. वही, पृ. 32

•••••